



बालिका शिक्षा के प्रति शिक्षकों की धारणा एवं उसका शैक्षणिक विकास पर प्रभाव

¹Shweta Shrivastava and ²Dr. Sanjay Kumar Dwivedi

¹Research Scholar, Shri Krishna University, Chhatarpur, Madhya Pradesh, India

²Assistant Professor, Shri Krishna University, Chhatarpur, Madhya Pradesh, India

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.19367719>

Corresponding Author: Shweta Shrivastava

सारांश

असम में किए गए इस अध्ययन में लड़कियों की शिक्षा के प्रति शिक्षकों और अभिभावकों के दृष्टिकोण का मूल्यांकन किया गया है। शिक्षक आमतौर पर अपने स्कूलों को लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देने में प्रभावी मानते हैं और लड़कियों की नामांकन दर और शैक्षणिक प्रदर्शन पर संतुष्टि व्यक्त करते हैं। वे लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देने के सरकारी प्रयासों की सराहना करते हैं और सामाजिक प्रगति और साक्षरता में इसके महत्व को पहचानते हैं। शिक्षकों का तर्क है कि लिंग के आधार पर शिक्षा तक पहुँच में बाधा नहीं आनी चाहिए, और वे इस बात पर जोर देते हैं कि लड़कियों में लड़कों के समान बौद्धिक क्षमताएँ होती हैं। उल्लेखनीय रूप से, वे इस धारणा को अस्वीकार करते हैं कि कक्षाओं में नेतृत्व की भूमिकाएँ केवल पुरुषों तक ही सीमित होनी चाहिए और उनका मानना है कि वर्तमान शैक्षणिक संस्थान छात्राओं की पर्याप्त सेवा करते हैं, हालाँकि वे ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियों के लिए शैक्षिक असमानताओं को और भी स्पष्ट रूप से देखते हैं।

मूल शब्द: बालिका, शिक्षा, राय, विश्लेषण, शिक्षक, असमानता, सामाजिक प्रगति

प्रस्तावना

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्तियों को उस सामाजिक व्यवस्था में एकीकृत होने के लिए तैयार किया जाता है जिसमें वे रहते हैं। यूफोरिया का मानना है कि शिक्षा का प्राथमिक लक्ष्य व्यक्तियों को सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक कार्यक्रमों में सफल भागीदारी के लिए आवश्यक कौशल, ज्ञान और दृष्टिकोण प्राप्त करने और विकसित करने के अवसर प्रदान करना है। इसी प्रकार, शुआइबू (2010) इस बात पर जोर देते हैं कि शिक्षा प्रशिक्षण और निर्देश की एक प्रक्रिया है जिसे ज्ञान प्रदान करने और कौशल विकसित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह सावधानीपूर्वक पोषण के माध्यम से शरीर और मन दोनों को मज़बूत बनाती है। इसलिए, शिक्षा का उद्देश्य लिंग भेद के बिना लोगों को सुसज्जित, सशक्त और मुक्त

करना है, खासकर जब यह समाज में प्रत्येक व्यक्ति का मौलिक अधिकार है।

शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है जिसका उपयोग आप दुनिया को बदलने के लिए कर सकते हैं। एक पुरुष को शिक्षित करें और आप एक व्यक्ति को शिक्षित करते हैं, एक महिला को शिक्षित करें और आप एक परिवार को शिक्षित करते हैं। महिलाओं को सशक्त बनाने का अर्थ है ऐसा वातावरण बनाना जिसमें वे अपने व्यक्तिगत विकास और समग्र रूप से समाज के लिए स्वतंत्र निर्णय ले सकें। सशक्तिकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा महिलाओं को निर्णय लेने में अधिक नियंत्रण और भागीदारी प्राप्त होती है जो बदले में राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और नागरिक विभिन्न क्षेत्रों में पुरुषों के साथ समानता प्राप्त करने में मदद करती है। लैंगिक समानता का सिद्धांत

भारतीय संविधान की प्रस्तावना, मौलिक अधिकारों, मौलिक कर्तव्यों और नीति निर्देशक सिद्धांतों में निहित है। संविधान न केवल महिलाओं को समानता प्रदान करता है बल्कि राज्य को महिलाओं के पक्ष में सकारात्मक भेदभाव के उपाय करने और अपनाने का अधिकार भी देता है। बच्चे की शिक्षा के प्रति माता-पिता का सकारात्मक दृष्टिकोण बच्चे की स्कूल उपस्थिति और शैक्षणिक उपलब्धि को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण है। स्कूली शिक्षा और शिक्षा के प्रति अनुकूल दृष्टिकोण बच्चों के वर्तमान और भविष्य के अध्ययन के प्रति माता-पिता की जागरूकता को बढ़ाता है। बच्चों की शिक्षा के प्रति माता-पिता का रवैया कम सामाजिक-आर्थिक स्थिति से प्रतिकूल रूप से प्रभावित होता है और चूंकि आदिवासी वंचित आबादी का गठन करते हैं, इसलिए यह उम्मीद की जाती है कि आदिवासी बच्चों के माता-पिता का रवैया शिक्षा के प्रति प्रतिकूल होगा। हालांकि, वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य यह जांचना है कि क्या आदिवासी माता-पिता आज सरकारी प्रयासों और पहलों के माध्यम से शिक्षा के मूल्यों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के परिणामस्वरूप अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति सकारात्मक और अनुकूल रवैया प्रदर्शित करते हैं। माता-पिता का व्यवहार मूल रूप से माता-पिता के अपने बच्चों के प्रति रवैये का सवाल है। माता-पिता के रवैये का उनके बच्चों पर शिक्षा के प्रति गहरा प्रभाव पड़ता है। माता-पिता आदतों को विकसित करने और बच्चे के सामाजिक चरित्र को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। माता-पिता-बच्चे का रिश्ता सभी मानवीय रिश्तों में सबसे स्वाभाविक और सर्वव्यापी है।

साहित्य की समीक्षा: ओचवाडा, युआनिता और जॉन, सिमियु और कोस्गेर्ड, रोज़लीन। (2025) ^[6]। केन्या और दुनिया भर में कई कारणों से लड़के और लड़कियों के बीच शैक्षणिक प्रदर्शन अलग-अलग रहा है। इस अध्ययन का उद्देश्य किसुमू काउंटी के चयनित मिश्रित पब्लिक प्राइमरी स्कूलों में लड़के और लड़कियों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर बच्चे की शिक्षा के प्रति माता-पिता के रवैये के प्रभाव की जांच करना था। इस अध्ययन में एक वर्णनात्मक सर्वेक्षण अनुसंधान डिजाइन का उपयोग किया गया। किसुमू काउंटी के पब्लिक प्राइमरी स्कूलों के प्रधानाध्यापक/उप शिक्षक, कक्षा शिक्षक, विषय शिक्षक, विद्यार्थी और उनके माता-पिता लक्षित जनसंख्या का गठन करते हैं। स्तरीकृत नमूनाकरण, सरल यादृच्छिक नमूनाकरण और उद्देश्यपूर्ण नमूनाकरण का उपयोग किया गया। लक्षित जनसंख्या के 30% का नमूना

आकार इस्तेमाल किया गया था। प्राथमिक और माध्यमिक दोनों डेटा क्रमशः प्रश्नावली और लिखित दस्तावेजों का उपयोग करके एकत्र किए गए थे। डेटा विश्लेषण में सामाजिक विज्ञान के लिए सांख्यिकीय पैकेज का उपयोग किया गया था बच्चों की शिक्षा के प्रति अभिभावकों के रवैये ने शिक्षार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन में 11% की भूमिका निभाई और पाया कि बच्चों की शिक्षा के प्रति अभिभावकों के रवैये में एक इकाई की वृद्धि से शैक्षणिक प्रदर्शन में 63% सुधार होता है। इस अध्ययन का निष्कर्ष है कि शिक्षार्थियों का शैक्षणिक प्रदर्शन, बच्चों की शिक्षा के प्रति अभिभावकों के रवैये से काफी प्रभावित होता है और यह सुझाव दिया गया है कि अभिभावकों को अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति सकारात्मक रवैया अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए क्योंकि यह रवैया शिक्षार्थियों के शैक्षणिक प्रदर्शन में 11% की भूमिका निभाता है।

फातिमा, उरूज और सलीम, अरशद और रिंद, ज़ैन उल आब्दीन। (2023) ^[7]। इस अध्ययन का उद्देश्य लड़कियों की माध्यमिक शिक्षा के प्रति अभिभावकों के रवैये की जांच करना था। इसने शिक्षित और अशिक्षित अभिभावकों, नौकरीपेशा और बेरोजगार अभिभावकों, और परिवहन और गैर-परिवहन सुविधाओं के बीच अंतरों पर भी गौर किया। अभिभावकों से डेटा एकत्र करने के लिए एक वर्णनात्मक शोध डिजाइन का उपयोग किया गया था और दृष्टिकोण पूरी तरह से मात्रात्मक था। अध्ययन करने के लिए, जिला मटियारी में लड़कियों के अभिभावकों का चयन किया गया। नमूना आकार 80 यादृच्छिक रूप से था और अभिभावकों से डेटा एकत्र करने के लिए एक सरल यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक का उपयोग किया गया था। परिणाम: निष्कर्षों से पता चला कि अभिभावकों का रवैया लड़कियों की शिक्षा के प्रति सकारात्मक था। सांख्यिकीय रूप से डेटा ने पुष्टि की कि कार्यरत और बेरोजगार अभिभावकों के बीच कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर ($t=1.21, p=.907$) नहीं है। निष्कर्षों ने यह भी बताया कि शिक्षित और अशिक्षित अभिभावकों के बीच सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर ($t3.107, p=002$) है सर्वेक्षण से लड़कियों की शिक्षा के लिए व्यापक समर्थन और समान अवसरों की आवश्यकता का संकेत मिलता है। एक समावेशी समाज के निर्माण और सभी के लिए शिक्षा की परिवर्तनकारी शक्ति को आगे बढ़ाने के लिए जागरूकता पहलों और सुधारों को लागू करना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

एक्का, राजेश। (2024) ^[8]। बालिकाओं की शिक्षा भारतीय शिक्षा व्यवस्था का एक अभिन्न अंग है। राष्ट्र का विकास

बालिकाओं की शिक्षा की दर पर निर्भर करता है। बालिकाओं की शिक्षा के बिना एक विकसित समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। देश को प्रगति, समृद्धि और एक विकसित राष्ट्र की ओर ले जाने के लिए महिलाओं में जागरूकता आवश्यक है। बालिकाओं को उनके अधिकारों, कर्तव्यों और अन्य शिक्षाओं के बारे में शिक्षित करके उनकी जागरूकता बढ़ाई जा सकती है, जिसका प्रभाव देश के विकास पर पड़ेगा। अभिभावकों और शिक्षकों को बालिकाओं की शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखने की आवश्यकता है। कुछ अभिभावक बालिकाओं की शिक्षा को आवश्यक नहीं मानते। अभिभावकों को यह समझना चाहिए कि बालिकाओं की शिक्षा न केवल परिवार के लिए, बल्कि देश के लिए भी आवश्यक है। यह अध्ययन भारत के ओडिशा राज्य के सुबरनपुर जिले में बालिकाओं की शिक्षा के प्रति अभिभावकों और शिक्षकों के दृष्टिकोण को जानने के लिए किया गया है। सुबरनपुर जिला उत्तर में संबलपुर जिले और पश्चिम में बलांगीर जिले से घिरा है। 50 अभिभावकों और 30 शिक्षकों के उत्तर एकत्र किए गए और पाया गया कि अधिकांश उत्तरदाता अपनी बेटियों को शिक्षित करना चाहते हैं।

सुरेश, चिन्ना. (2022) [9]. महिलाओं के खिलाफ हिंसा को कम करने के लिए केंद्र और राज्य सरकारों को दोष देना कोई दीर्घकालिक रणनीति नहीं है। लड़कियों की सुरक्षा और संरक्षण के लिए, सरकार कठोर नियम और नीतियाँ बना सकती है। हालाँकि, समाज के सदस्यों की भागीदारी और महिलाओं व लड़कियों के प्रति उनके दृष्टिकोण और धारणाएँ एक बड़ा अंतर पैदा करती हैं। इसका उत्तर घर की संरचना में पाया जा सकता है, जहाँ माता-पिता अपने बेटों को समाज में लड़कियों के महत्व के बारे में सिखा सकते हैं। यह लेख लड़कियों की शिक्षा, लैंगिक असमानता, बाल लिंगानुपात और नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार की बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना, जिसका उद्देश्य बालिकाओं के महत्व को बढ़ाना और भारत के गिरते बाल लिंगानुपात को उलटना है, के बारे में माता-पिता की धारणाओं और दृष्टिकोणों की पड़ताल करता है। वर्तमान अध्ययन में, एक वर्णनात्मक गुणवत्ता सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया और तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश के 171 अभिभावकों ने भाग लिया। निष्कर्ष से पता चला कि अपनी खराब सामाजिक-आर्थिक स्थिति के बावजूद, अधिकांश अभिभावकों ने लड़कियों की शिक्षा को प्राथमिकता दी और धीरे-धीरे लैंगिक समानता की आवश्यकता को पहचाना। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना बालिकाओं के अभिभावकों के दृष्टिकोण और धारणाओं को मूर्त रूप से प्रभावित कर रही है।

हालाँकि, ग्रामीण इलाकों में लगभग 30% माता-पिता बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के बारे में अनभिज्ञ हैं, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में इस योजना के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रयास करना आवश्यक हो गया है।

ज़ैब, अहमद. (2020) [10]. शिक्षा तक पहुँच में पुरुष और महिला के बीच असमानता के विभिन्न कारण रहे हैं। इन सबके बीच, समाज या राज्यों पर शासन करने में पुरुष वर्चस्व के पक्ष में सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराएँ और प्रथाएँ, खराब अर्थव्यवस्था के साथ मिलकर सबसे प्रमुख कारक रहे हैं। लड़कियों का नामांकन प्राथमिक स्तर पर लड़कों की तुलना में लगभग आधा और माध्यमिक स्तर के साथ-साथ विश्वविद्यालय में लगभग एक-चौथाई है। ग्रामीण क्षेत्रों को अलग-अलग करने पर, तथ्य और भी चौंकाने वाले हो जाते हैं, क्योंकि माध्यमिक स्तर पर लड़कियों का नामांकन ग्रामीण आबादी में लड़कों का दसवां हिस्सा है। कम प्रतिशत सह-शिक्षा और विभिन्न कारकों, सांस्कृतिक बाधाओं, आर्थिक स्थिति, स्कूलों की दूरी, शिक्षा के लिए लड़कों के पक्ष में माता-पिता आदि के कारण है। शैक्षिक सिद्धांतों और पिछले संबंधित शोधों ने भी समाज में एक दर्जा पाने के लिए माता-पिता के अलग-अलग रवैये में पुरुष और महिला शिक्षा के बीच के अंतर को परिभाषित किया है। शोध के निष्कर्ष के रूप में यह पाया गया कि समाज में जितने अधिक सह-शिक्षा संस्थान होंगे, माता-पिता का अपनी बेटियों की शिक्षा के प्रति प्रतिकूल रवैया उतना ही अधिक होगा, यह पाया गया कि माताएं पिता की तुलना में अपनी बेटियों की शिक्षा की अधिक अपेक्षा करती हैं और यह पाया गया कि कम आय वाले माता-पिता अपनी बेटियों की शिक्षा में कम रुचि रखते हैं।

अनुसंधान क्रियाविधि

449 शिक्षकों का चयन लिंग, क्षेत्र के आधार पर किया गया, ताकि यह अध्ययन की जनसंख्या के संपूर्ण दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व कर सके। साक्षात्कार कार्यक्रम तैयार करने के लिए शिक्षकों का बालिकाओं की शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण। एकत्रित प्राथमिक आँकड़ों का सांख्यिकीय पैकेज SPSS की सहायता से क्रॉस-टेबुलेशन द्वारा विश्लेषण किया गया था। इसके अतिरिक्त, विश्लेषण किए गए आँकड़ों को आसानी से समझने और बोधगम्यता के लिए सारणीबद्ध रूप में प्रस्तुत किया गया था। इस अध्ययन के लिए प्राथमिक और द्वितीयक, दोनों आँकड़ों का उपयोग किया गया। प्राथमिक आँकड़े एकत्र करने के लिए, शिक्षकों और अभिभावकों के तीन अलग-अलग साक्षात्कार कार्यक्रम

तैयार किए गए, जिनमें बालिकाओं की शिक्षा के बारे में उनकी राय जानने के लिए उनसे कुछ प्रश्न पूछे गए। द्वितीयक आँकड़ों के लिए, शिक्षा से संबंधित विभिन्न उपलब्ध दस्तावेजों, पुस्तकों, पत्रिकाओं, वार्षिक रिपोर्टों, नियमावलियों और अन्य साहित्य का संदर्भ लिया गया।

डेटा का विश्लेषण

अध्ययन के लिए कुल 449 शिक्षकोंको एक नमूने के रूप में लिया गया था जिसमें 85 शिक्षक 25 वर्ष से कम आयु वर्ग के थे, 209 शिक्षक 26-35 वर्ष के बीच, 126 शिक्षक 36-45 वर्ष के बीच और 29 शिक्षक 45 वर्ष से अधिक आयु के थे। शिक्षकों के कुल उत्तरदाताओं में से 198 शिक्षक पुरुष थे और 251 महिला शिक्षक थीं। शैक्षणिक योग्यता के आधार

पर, 70 शिक्षकों को शिक्षण प्रशिक्षण योग्यता के साथ यूजी, 200 शिक्षकों को स्नातक योग्यता, 39 शिक्षकों को बी.एड/एम.एड योग्यता के साथ स्नातक, 61 शिक्षकों को पीजी योग्यता और 79 शिक्षकों को पीजी और बी.एड/एम.एड योग्यता के साथ लिया गया था। इसे अनुभव के आधार पर भी वर्गीकृत किया गया है, 286 शिक्षकों को 10 साल से कम अनुभव के साथ, 117 शिक्षकों को 11-20 साल के अनुभव के साथ, 38 शिक्षकों को 21-30 साल के अनुभव के साथ और 8 शिक्षकों को 31 साल से अधिक अनुभव के साथ लिया गया इसके अलावा, अध्ययन के लिए शहरी क्षेत्रों से 234 और ग्रामीण क्षेत्रों से 215 शिक्षकों को लिया गया। बालिका शिक्षा के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण पर उनकी प्रतिक्रियाएँ नीचे दी गई तालिकाओं में दर्शाई गई हैं।

तालिका 1: आप जिस स्कूल में पढ़ा रहे हैं, वह बालिका शिक्षा प्रदान करने में प्रभावी है।

विशेषताएँ/प्रतिक्रियाएँ	रैंक	बहुत असरदार	कुछ हद तक असरदार	बिल्कुल भी प्रभावी नहीं
आयु (वर्षों में)	> 25	30 (35.3)	51 (60.0)	4 (4.7)
	26-35	121 (57.9)	74 (35.4)	14 (6.7)
	36-45	80 (63.5)	42 (33.3)	4 (3.2)
	< 45	18 (62.1)	11 (37.9)	0 (00.0)
लिंग	पुरुष	110 (55.6)	79 (39.9)	9 (4.5)
	महिला	139 (55.4)	99 (39.4)	13 (5.2)
अकादमिक योग्यता	शिक्षण प्रशिक्षण स्नातक के साथ	23 (32.9)	43 (61.4)	4 (5.7)
	यूजी	101 (50.5)	88 (44.0)	11 (5.5)
	बी.एड/एम.एड पीजी के साथ	24 (61.5)	14 (35.9)	1 (2.6)
	स्नातक	37 (60.7)	20 (32.8)	4 (6.6)
	बी.एड/एम.एड के साथ पीजी	64 (81.0)	13 (16.5)	2 (2.5)
अनुभव (वर्षों में)	> 10	150 (52.4)	118(41.3)	18(6.3)
	11-20	79 (67.5)	35(29.9)	3(2.6)
	21-30	15 (39.5)	22(57.9)	1(2.6)
	< 31	5 (62.5)	3(37.5)	0 (00.0)
क्षेत्रों	ग्रामीण	138 (59.0)	80 (34.2)	16 (6.8)
	शहरी	111 (51.6)	98 (45.6)	6 (2.8)

शिक्षकों से पूछताछ करने पर कि क्या जिस स्कूल में वे पढ़ा रहे हैं वह लड़कियों की शिक्षा प्रदान करने में प्रभावी है, इसे तालिका 1 में प्रस्तुत किया गया है। किसी भी चर के बावजूद अधिकांश उत्तरदाताओं ने जवाब दिया था कि उनके स्कूल लड़कियों की शिक्षा प्रदान करने में बहुत प्रभावी थे, 25 वर्ष से कम आयु वर्ग (60.0 प्रतिशत), शिक्षण प्रशिक्षण वाले यूजी (61.4 प्रतिशत) और 21-30 वर्षों के अनुभव (57.9 प्रतिशत) के उत्तरदाताओं के पास बहुत प्रभावी

विकल्प की तुलना में कुछ हद तक प्रभावी विकल्प पर अधिक प्रतिक्रियाएँ थीं। दिलचस्प बात यह है कि वर्षों में आयु वर्ग की वृद्धि के साथ, बहुत प्रभावी प्रतिक्रिया पर उत्तरदाताओं की संख्या में वृद्धि हुई है। ग्रामीण उत्तरदाताओं (51.6 प्रतिशत) की तुलना में शहरी उत्तरदाताओं (59.0 प्रतिशत) ने बहुत प्रभावी विकल्प पर प्रतिक्रिया दी थी। इसके अलावा, बिल्कुल प्रभावी नहीं विकल्प पर प्रतिक्रियाएँ कम थीं जो दर्शाती हैं

तालिका 2: क्या लड़कों और लड़कियों की बौद्धिक क्षमताओं में अंतर है?

विशेषताएँ/प्रतिक्रियाएँ	रैंक	हाँ	नहीं
आयु (वर्षों में)	> 25	25 (29.4)	60 (70.6)
	26-35	81 (38.8)	128 (61.2)
	36-45	43 (34.1)	83 (65.5)
	< 45	10 (34.5)	19 (65.5)
लिंग	पुरुष	80 (40.4)	118 (59.6)
	महिला	79 (31.5)	172 (68.5)
अकादमिक योग्यता	शिक्षण प्रशिक्षण स्नातक के साथ	31 (44.3)	39 (55.7)
	यूजी	67 (33.5)	133 (66.5)
	बी.एड/एम.एड के साथ स्नातक	15 (38.5)	24 (61.5)
	पीजी	13 (21.3)	48 (78.7)
	बी.एड/एम.एड के साथ पीजी	33 (41.8)	46 (58.2)
अनुभव (वर्षों में)	> 10	107 (37.4)	179 (62.6)
	11-20	41 (35.0)	76 (65.0)
	21-30	7 (18.4)	31 (81.6)
	< 31	4 (50.0)	4 (50.0)
क्षेत्रों	शहरी	90 (38.5)	144 (61.5)
	ग्रामीण	69 (32.1)	146 (67.9)

तालिका 2 में प्रस्तुत आंकड़ों से पता चला कि अधिकांश उत्तरदाताओं को बौद्धिक क्षमताओं में लड़के और लड़कियों के बीच कोई अंतर नहीं मिला। आयु चर के आधार पर, 25 वर्ष से कम आयु वर्ग के उत्तरदाताओं के उच्च बहुमत (70.6 प्रतिशत) और शेष श्रेणियों के उत्तरदाताओं के उचित बहुमत (60.0 प्रतिशत से ऊपर) ने प्रश्न से असहमति जताई। इसके अलावा, पुरुष उत्तरदाताओं (59.6 प्रतिशत) की तुलना में महिला उत्तरदाताओं (68.5 प्रतिशत) में से अधिक ने प्रश्न से असहमति जताई। शैक्षणिक योग्यता चर के आधार पर विश्लेषण करने पर, पीजी योग्यता वाले उत्तरदाताओं (78.7 प्रतिशत) की सबसे अधिक असहमति वाली प्रतिक्रिया थी, उसके बाद स्नातक उत्तरदाताओं (66.7 प्रतिशत) और

बी.एड/एम.एड के साथ स्नातक (61.5 प्रतिशत) थे, 21-30 वर्षों के अनुभव वाले उत्तरदाताओं (81.6 प्रतिशत) का एक महत्वपूर्ण बहुमत और 10 वर्षों से कम और 11-20 वर्षों के अनुभव वाले उत्तरदाताओं (60.0 प्रतिशत से अधिक) का एक अच्छा-खासा बहुमत इस प्रश्न से असहमत था, जबकि 30 वर्षों से अधिक के अनुभव वाले उत्तरदाताओं की प्रतिक्रियाएँ समान रूप से विभाजित थीं। दिलचस्प बात यह है कि शहरी उत्तरदाताओं (61.5 प्रतिशत) की तुलना में ग्रामीण उत्तरदाताओं (67.9 प्रतिशत) में इस प्रश्न से असहमति अधिक थी। प्रश्न पर सहमति व्यक्त करने वाले उत्तरदाताओं की संख्या भी पर्याप्त थी।

तालिका 3: शैक्षिक उपलब्धि में बालिकाओं की क्षमताएं बालकों के समान ही होती हैं।

विशेषताएँ/प्रतिक्रियाएँ	रैंक	हाँ	नहीं
वर्ष में उम्र)	> 25	77 (90.6)	8 (9.4)
	26-35	196 (93.8)	13 (6.2)
	36-45	123 (97.6)	3 (2.4)
	< 45	27 (93.1)	2 (6.9)
लिंग	पुरुष	183 (92.4)	15 (7.6)
	महिला	240 (95.6)	11 (4.4)
अकादमिक योग्यता	शिक्षण प्रशिक्षण स्नातक के साथ	64 (91.4)	6 (8.6)
	यूजी	185 (92.5)	15 (7.5)

	बी.एड/एम.एड के साथ स्नातक	36 (92.3)	3 (7.7)
	पीजी	61 (100.0)	0 (00.0)
	बी.एड/एम.एड के साथ पीजी	77 (97.5)	2 (2.5)
अनुभव (वर्षों में)	> 10	269 (94.1)	17 (5.9)
	11-20	111 (94.9)	6 (5.1)
	21-30	35 (92.1)	3 (7.9)
	< 31	8 (100.0)	0 (00.0)
क्षेत्रों	शहरी	221 (94.4)	13 (5.6)
	ग्रामीण	202 (94.0)	13 (6.0)

तालिका 3 में प्रस्तुत आँकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि शैक्षणिक उपलब्धि में छात्रों की क्षमताएँ छात्रों के समान ही हैं, क्योंकि उत्तरदाताओं का एक महत्वपूर्ण बहुमत (90.6 प्रतिशत से 100.0 प्रतिशत तक) किसी भी श्रेणी के किसी भी चर से इतर, इस दृष्टिकोण से सहमत था। इसके

अलावा, स्नातकोत्तर और 31 वर्ष से अधिक अनुभव वाले सभी उत्तरदाता (100.0 प्रतिशत) भी इस दृष्टिकोण से सहमत थे कि शैक्षणिक उपलब्धि में छात्रों की क्षमताएँ छात्रों के समान ही हैं।

तालिका 4: क्या कक्षा के मॉनिटर/नेता का पद केवल लड़कों को ही दिया जाना चाहिए?

विशेषताएँ/प्रतिक्रियाएँ	रैंक	हाँ	नहीं
आयु (वर्षों में)	> 25	11 (12.9)	74 (87.1)
	26-35	8 (3.8)	201 (96.2)
	36-45	6 (4.8)	120 (95.2)
	< 45	2 (6.9)	27 (93.1)
लिंग	पुरुष	18 (9.1)	180 (90.9)
	महिला	9 (3.6)	242 (96.4)
अकादमिक योग्यता	शिक्षण प्रशिक्षण स्नातक के साथ	0 (00.0)	70 (100.0)
	यूजी	20 (10.0)	180 (90.0)
	बी.एड/एम.एड के साथ स्नातक	5 (12.8)	34 (87.2)
	पीजी	2 (3.3)	59 (96.7)
	बी.एड/एम.एड के साथ पीजी	0 (00.0)	79 (100.0)
अनुभव (वर्षों में)	> 10	17 (5.9)	269 (94.1)
	11-20	4 (3.4)	113 (96.6)
	21-30	6 (15.8)	32 (84.2)
	< 31	0 (00.0)	8 (100.0)
क्षेत्रों	शहरी	11 (4.7)	223 (95.3)
	ग्रामीण	16 (7.4)	199 (92.6)

तालिका 4 में प्रस्तुत आँकड़ों से पता चला कि किसी कक्षा के मॉनिटर/नेता का पद केवल लड़कों को नहीं दिया जाना चाहिए। उत्तरदाताओं का अत्यधिक महत्वपूर्ण बहुमत (90.0 प्रतिशत से ऊपर) किसी भी चर के बावजूद प्रश्न से असहमत थे और 25 वर्ष से कम आयु वर्ग (87.1 प्रतिशत), बी.एड/एम.एड के साथ स्नातक (87.2 प्रतिशत) और 21-30 वर्षों के अनुभव (84.2 प्रतिशत) के उत्तरदाताओं से कम

प्रतिक्रियाएं आईं। इसके अलावा, शिक्षण प्रशिक्षण के साथ यूजी, बी.एड/एम.एड और 31 से अधिक वर्षों के अनुभव वाले सभी उत्तरदाताओं (100.0 प्रतिशत) ने भी प्रश्न से असहमति जताई। दिलचस्प बात यह है कि पुरुष उत्तरदाताओं (90.0 प्रतिशत) की तुलना में अधिक महिला उत्तरदाताओं (96.4 प्रतिशत) ने प्रश्न से असहमति जताई। ऐसे बहुत से उत्तरदाता थे जो प्रश्नकर्ता से असहमत थे।

तालिका 5: क्या समाज बालिका शिक्षा को महत्व दे रहा है?

विशेषताएँ/प्रतिक्रियाएँ	रैंक	हाँ	नहीं
आयु (वर्षों में)	> 25	68 (80.0)	17 (20.0)
	26-35	120 (57.4)	89 (42.6)
	36-45	96 (76.2)	30 (23.8)
	< 45	18 (62.1)	11 (37.9)
लिंग	पुरुष	126 (63.6)	72 (36.4)
	महिला	176 (70.1)	75 (29.9)
अकादमिक योग्यता	शिक्षण प्रशिक्षण स्नातक के साथ	45 (64.3)	25 (35.7)
	यूजी	127 (63.5)	73 (36.5)
	बी.एड/एम.एड के साथ स्नातक	24 (61.5)	15 (38.5)
	पीजी	47 (77.0)	14 (23.0)
	बी.एड/एम.एड के साथ पीजी	59 (74.7)	20 (25.3)
अनुभव (वर्षों में)	> 10	175 (61.2)	111 (38.8)
	11-20	96 (82.1)	21 (17.9)
	21-30	23 (60.5)	15 (39.5)
	< 31	8 (100.0)	0 (00.0)
क्षेत्रों	शहरी	164 (70.1)	70 (29.9)
	ग्रामीण	138 (64.2)	77 (35.8)

तालिका 5 में प्रस्तुत आँकड़ों से प्राप्त अनुमान के अनुसार, यह पता चला कि समाज में लड़कियों को महत्व दिया जाता है क्योंकि किसी भी घर की परवाह किए बिना अधिकांश उत्तरदाता इस पहलू से सहमत थे। इसके अलावा, सबसे ज्यादा सहमत उत्तर 31 वर्ष से अधिक अनुभव वाले उत्तरदाताओं (100.0 प्रतिशत) से आए, उसके बाद 11-20 वर्ष के अनुभव वाले उत्तरदाताओं (82.1 प्रतिशत) और 25 वर्ष से कम आयु वर्ग (80.0 प्रतिशत) से आए और सबसे कम सहमत उत्तर 26-35 वर्ष आयु वर्ग (57.4 प्रतिशत) के उत्तरदाताओं से आए। असहमत उत्तर देने वाले उत्तरदाताओं की संख्या भी काफी थी।

निष्कर्ष

शिक्षकों के अनुसार पश्चिमी शिक्षा के प्रति अभिभावकों के रवैये से बालिकाओं के अभिभावकों पर कोई असर नहीं पड़ा और न ही इससे नामांकन कम हुआ और स्कूल छोड़ने की दर भी अधिक रही। इसके अलावा शिक्षक आम तौर पर इस बात पर सहमत थे कि अभिभावकों को नहीं लगता कि बालिकाओं को शिक्षित करना महज समय और पैसे की बर्बादी है और वे अपनी बेटियों को सह-शिक्षा संस्थानों में जाने देने में हिचकिचाते नहीं हैं, भले ही उन्हें लड़कों के साथ कुछ समय बिताना पड़े। शिक्षकों की मिली-जुली प्रतिक्रिया थी

संदर्भ

1. मीर डॉक्टर, लोन शौकत. बालिका शिक्षा के प्रति अभिभावकों का दृष्टिकोण: एक समीक्षा. 2023;2349-3429. doi:10.25215/1101.161.
2. ओगुनलेड जोसेफ, ओलुरोतिमी, ओगुनलेड बामिडेले, ओलुसोला ओगुनलेड, बाबाटुंडे (श्रीमती), एडेकेमी क्रिस्टियाना, अलीयू सानुसी. उत्तर पश्चिम, नाइजीरिया में बालिका शिक्षा के प्रति माता-पिता के रवैये को पुनः स्थापित करना. 2019.
3. दास चिन्मय, कर सत्यजीत. लड़कियों की शिक्षा के प्रति माता-पिता का रवैया: समुदाय और लिंग के संबंध में. 2018;8:282-293.
4. ओसिकी जे. बालिका शिक्षा और आर्थिक सशक्तिकरण के प्रति माता-पिता और शिक्षकों का दृष्टिकोण. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इमोशनल साइकोलॉजी एंड स्पोर्ट एथिक्स. 2007;8(1). doi:10.4314/ijepse.v8i1.38192.
5. अडोमाको ग्यासी प्रिसिला, चैन यिंगहुआ, अमिसा एकुआ. आशामन नगर पालिका में बालिका शिक्षा और अभिभावकों की जागरूकता एवं भागीदारी का आकलन. विज्ञान, इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी में वैज्ञानिक अनुसंधान का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल. 2020:333-360. doi:10.32628/IJSRSET1207562.

6. ओचवाडा यूअनिता, जॉन सिमियु, कोस्गेई रोज़लाइन. किसुमु काउंटी के चुनिंदा मिश्रित पब्लिक प्राइमरी स्कूलों में बच्चों की शिक्षा के प्रति माता-पिता के रवैये का लड़के और लड़कियों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर प्रभाव. अफ्रीका जर्नल ऑफ टेक्निकल एंड वोकेशनल एजुकेशन एंड ट्रेनिंग. 2025;10:74-80. doi:10.69641/afritvet.2025.101180.
7. फातिमा उरूज, सलीम अरशद, रिंद जैन उल आब्दीन. लड़कियों की माध्यमिक शिक्षा के प्रति माता-पिता का रवैया: जिला मटियारी, सिंध, पाकिस्तान के विद्यालयों का अध्ययन. समसामयिक शैक्षिक प्रथाएँ. 2023;2. doi:10.62681/sprypublishers.scep/2/2/9.
8. एक्का राजेश. ओडिशा के सुबरनपुर ज़िले में बालिकाओं की शिक्षा के प्रति अभिभावकों और शिक्षकों का दृष्टिकोण. अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक विज्ञान पत्रिका. 2024;47. doi:10.31901/24566322.2024/47.01.1364.
9. सुरेश चिन्ना. लड़कियों की शिक्षा, लैंगिक असमानता, बाल लिंगानुपात में गिरावट और “बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ” योजना पर अभिभावकों की धारणा. 2022;4.
10. ज़ैब अहमद. बेटियों की शिक्षा के प्रति माता-पिता के दृष्टिकोण पर एक अध्ययन. जर्नल ऑफ एजुकेशनल मैनेजमेंट एंड सोशल साइंसेज. 2020;1(1):33-40. doi:10.48112/jemss.v1i1.10.

Creative Commons (CC) License

This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.